आरएनआई नं. . RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. . RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस, उदयपुर
प्रेषण दिनांक -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-256म • उदयपुर, शनिवार 01 जनवरी, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपके अपने नारायण सेवा संस्थान द्वारा
नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनायें

शेष जिंदगी हुई आसान

संस्थान द्वारा नवम्बर–21 में विभिन्न शहरों में शिविर आयोजित कर दुर्घटनाओं में अंग (हाथ–पैर) खोने वाले भाई–बहनों को निःशुल्क कृत्रिम अंग लगाए गए। इससे पूर्व आयोजित शिविरों में कृत्रिम अंग बनाने के लिए प्रोस्थेटिक इंजीनियर द्वारा उनके कटे अंग की मैजरमेंट प्रक्रिया पूरी की गई।

आकोला – महाराष्ट्र आकोला स्थित संस्थान शाखा के तत्वावधान में दो दिवसीय (17–18 नवम्बर–2021) विशाल निःशुल्क कृत्रिम अंग वितरण शिविर आयोजित किया गया। खंडेलवाल भवन में सम्पन्न शिविर के मुख्य अतिथि खंडेलवाल समाज के अध्यक्ष श्री गोपाल जी खंडेलवाल थे। अध्यक्षता दमामी नेत्र चिकित्सालय के निदेशक श्री सभापति जी ने की।

शाखा संयोजक श्री हरीश जी मानघणे ने अतिथियों का स्वागत करते हुए शिविर प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। जिसके अनुसार शिविर में 195 दिव्यांगों ने पंजीयन करवाया। जिनमें से 175 को कृत्रिम हाथ–पैर लगाए गए, जबकि 20 दिव्यांगों को टेक्नीशियन श्री नाथुसिंह जी व श्री नरेश जी वैष्णव ने कैलिपर लगाए। शिविर के विशिष्ट अतिथि क्षेत्रीय विधायक श्री रणधीर जी सावरकर, उद्योगपति दीपक बाबू जी मरतीया, श्री शिवमगवान जी माला, श्रीमति मंजू देवी जी गोयना व श्री सुमाष जी लोढ़ा थे। संचालन हरिप्रसाद जी लढ्ढा ने किया।

भुज –

बालदिवस को 14 नवम्बर को गुजरात के भुज शहर में विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच, आपॅरेशन चयन तथा कृत्रिम अंग माप शिविर आयोजित किया गया। श्री घनश्यामसिंह जी झाला के सहयोग से दशनाम गोस्वामी वाड़ी में संस्थान के तत्वावधान में सम्पन्न इस शिविर में 82 दिव्यांगों का पंजीयन हुआ। मुख्य अतिथि क्षेत्रीय सांसद श्री विनोद जी भाई चाबड़ थे, जबकि अध्यक्षता आयोजक समाजसेवी श्री घनश्याम सिंह जी झाला ने की।

शिविर में 21 दिव्यागों के लिए कृत्रिम अंग तथा 4 के लिए केलिपर बनाने का नाप टेक्नीशियन श्री नाथुसिंह जी ने लिया। डॉ. सिहार्थसंगा जी ने दिव्यांगों की जांच कर उनमें से 13 का निःशुल्क ऑपरेशन के लिए चयन किया।

शिविर में विशिष्ट अतिथि जे.वी.सी. ग्रुप गांधीधाम की अध्यक्षता श्रीमती पारूल जी बेन सोनी श्री भरतभाई जैं. जी गौड़, श्री रामभाई जी मेहता व योगेश भाई जी सोनी थे। संस्थान के राजकोट आश्रम प्रभारी श्री तरुण जी नागदा ने अतिथियों का स्वागत–सत्कार किया। संचालन व व्यवस्था में प्रभारी हरिप्रसाद जी लढ्ढा ने सहयोग किया।

फूलों के मानिंद खिले बच्चों के चेहरे

बालदिवस के मौके पर नारायण बाल अकादमी में 14 नवम्बर , 2021 को फनफेयर का मनमोहक आयोजन हुआ, जिसमें अकादमी के 250 बच्चे और स्कूल प्रबन्धन शामिल हुआ। कार्यक्रम में संस्थान संस्थापक पूज्य गुरुदेव कैलाश जी 'मानव' व अध्यक्ष सेवक प्रशांत जी मैया मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। खेल–खेल में पढ़ाने के उद्देश्य से आयोजित समारोह में बच्चों को 8–8 कूपन दिए गए। 3 कूपन भोजन के और 5 गेम्स के थे। बच्चों ने ग्लास ब्रेकिंग गेम्स, रिंक थ्रोइंग, पहियों का खेल और खाने में मकई का लावा, पानी पूरी भेल पूरी जैसे फास्ट फूड का आनन्द लिया। बच्चों ने मंच पर गीत व नृत्य की प्रस्तुतियां दी। हंसी–ठिठोली के माहौल में बच्चों के चेहरे फूलों की मानिन्द बेहद खिले–खिले नजर आए।

यह आयोजन शिक्षा के प्रति उनके लगाव में सहायक होगा। अतिथियों का स्वागत प्राचार्य अर्चना जी ने किया। संस्थान निदेशक पलक जी अग्रवाल ने बताया कि फनफेयर में कठपुतली शो से बच्चे बहुत अधिक प्रभावित हुए. कार्यक्रम को दैनिक भास्कर के स्थानीय सम्पादक श्री अजय जी मिश्रा ने भी सम्बोधित किया।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

ये तो रामजी री कृपा है– होकम। स्वभाव बदले राम भगवान री कृपाऊं। कृष्ण भगवान री अनुकम्पाऊं। जो सांवरिया सेठ नानीबाई रो मायरो भर देवे। जो सांवरिया सेठ प्रतिक्षण आपणा में श्वास लाई रियो है, श्वास ले जाई रियो है। ऑक्सीजन, कितनी बार तीस सैकण्ड में छत्तीस बार हृदय धड़क रहा है। उन सांवरिया की कृपा से, राम भगवान की कृपा से। आपश्री का, हमारा मिलन हो रहा है।

ये आपश्री का और हमारा मिलन व्यवहार में लाभ होवे। घर–गृहस्थी अच्छी बन जावे। दाम्पत्य जीवन में सुख आई जावे। माता– पिता री आज्ञा पालन करने लाग जावां। बच्चों ने संस्कारित कर दां, संस्कार करवा शिक्षित कर दां। तो ये लाभ है आपा ने मिलनोज वेई जाए। आपणे, पिछली बार आपी मलिया था तो रामचरितमानस –

स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथगाथा।
भाषा निबन्धमति मंजुल मातनोति।।

जो हुलसी के बेटे तुलसीदास जी महाराज। कभी–कभी विचार आता है। साढ़े पाँच सौ साल पहले गोस्वामीजी महाराज मैं तो कहूं– अंशवतार हुआ, अंश में अवतार हुआ। कृष्ण भगवान ने गीताजी में कहा है कि– जहाँ भी अर्जुन, धनजंय, पार्थ तुम अच्छे कार्य को देखो तो वो समझना मेरा अंशावतार है। ऐसे गोस्वामी तुलसीदास जी महाराज ने कितनी कठिनाई से रामचरितमानस लिखी होगी। आप अन्दाज लगाओ।

कागज नहीं, पेन नहीं पचास साल पहले भी ये बॉलपेन का आविश्कार नहीं हुआ था –महाराज। हाँ, जब मैं छठी–सातवी में पढता था, और उसके पहले हमारे पिताजी कभी– कभी बरुश से काम लेते थे। एक वो पेन होता था जिसमें ड्रोप से स्याही डालते थे। बॉलपेन का भी आविष्कार नहीं। उस समय हमारे– आपके लिये ये रामचरित मानस क्यों लिखा कि इसके स्वाध्याय से राम भगवान की वो कृपा जो।

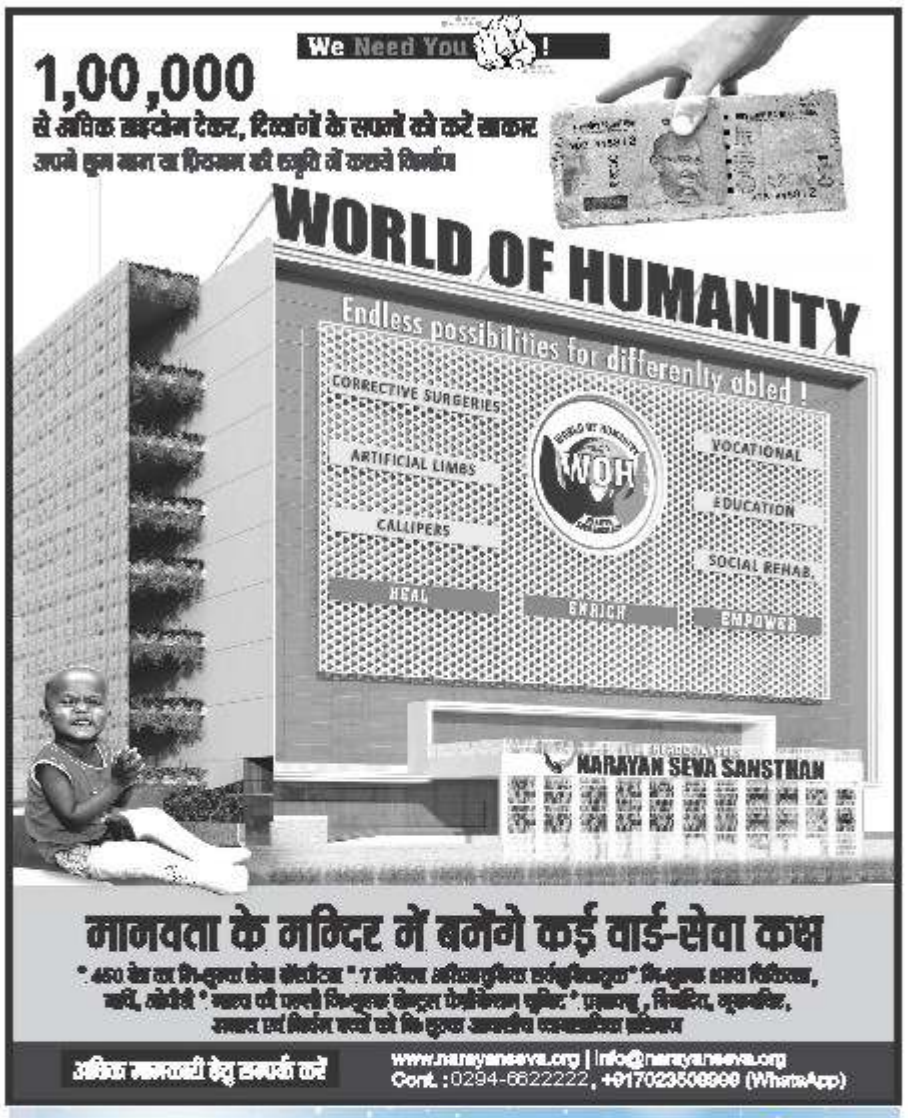

सम्पादकीय

नूतन वर्ष एक बार फिर नूतन अवसर लेकर हमारे समक्ष है। यों तो प्रतिपल जीवन में नूतनता चलती ही रहती है। विश्व की हर रचना में परिवर्तन आता रहता है। व्यक्ति के शरीर में परिवर्तन आता रहता है और तो और विचारों में भी नूतनता का प्रवाह सतत चलता रहता है।

फिर भी वर्ष का बदलना हो या विचार का। व्यक्ति उसे अवसर मानकर लाभ उठा ले तो नूतनता हितकारी हो जाती है। पिछले वर्ष से हम कोरोना महामारी से उबरने लगे हैं। टीकाकरण व्यापक रूप से हुआ है किन्तु अभी भी कोरोना के प्रभाव को निष्प्रभावी नही किया जा सका है। जो लोग प्रारंभ में इस महामारी को हल्के रूप में ले थे वे भी दूसरी लहर के बाद इसकी गंभीरता समझ चुके हैं। सावधानियां जारी हैं परन्तु लापरवाहियां भी जारी हैं। आज जब विशेषज्ञ इसका स्वरूप बदल कर तीसरी लहर के रूप में आशंका व्यक्त कर रहे हैं तो हमारी सजगता ही काम आयेगी। जो गाइडलाईन है उसका पालन ही बचाव है।

यह सब होने पर भी हमें नवीन उत्साह के साथ, नये वर्ष के नये संकल्पों के साथ, नई ऊर्जा और विचारधारा के साथ अपने जीवन को सुदृढ़, सामाजिक सरोकारों को जीवंत तथा लोक कल्याण की भावना को प्रबल बनाना है। इसी विश्वास के साथ कि हम इन संकटों से उबरेंगे, नव वर्ष की शुभकामनायें।

कुछ काव्यमय

कुछ नवीन है,
सब नवीन है।
उत्साहों से भरें हुए तो
जीवन ताकधिना-धीन है।
नया साल है,
नयी तरंगें,
हर नूतनता स्वाधीन है।
सबमें समरसता छा जाये,
फिर कौन है राजा,
कौन दीन है।
कुछ नवीन है,
सब नवीन है।

- वरदीचन्द राव

कोविड-19 के नियम

- भीड़-भाड़ वाली जगहों पर जाने से बचें।
- सार्वजनिक स्थानों पर ना थूकें।
- बार-बार अपने हाथों को धोएं।
- बाहर जाते समय मास्क जरुर लगाऐं।
- अपनी आंख, नाक या मुंह को न छुएं।
- जुकाम और खांसी होने पर मास्क पहनें।
- छींकते समय नाक और मुंह को ढकें।

अपनों से अपनी बात

आत्मसत्ता की प्रतीति

धर्म का सार– आतमसत्ता का अहसास है, 'स्वयं को जानो।' इसके बिना व्यक्तित्व विकास संभव नहीं होगा। यह सब ध्यान से संभव होगा। ध्यान साधना का प्रथम चरण और अंतिम सोपान भी है। ध्यान से ही काया का उत्सर्ग हो सकता है। ध्यान से ही बाह्य उपाधियों के प्रति ममत्व भाव का त्याग हो सकता है। इसलिए ध्यान कारण है कायोत्सर्ग का और कायोत्सर्ग कारण है मोक्ष का। जो साधना आत्मा को मोक्ष से जोड़ती है वह साधना भी 'योग' ही कहलाती है। पतंजलि ने योग के आठ नियम बताएं है– यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्हायार, धारणा,ध्यान और समाधि। जो साधना, ज्ञान, दर्शन चरित्रमय है वह मोक्ष का साधन है। उसे भी योग कहते हैं। आत्मा का ज्ञान होने से मुक्ति होती है। किन्तु वह ज्ञान योग के बिना नहीं होता। ध्यान देह धर्मी शक्तियों द्वारा

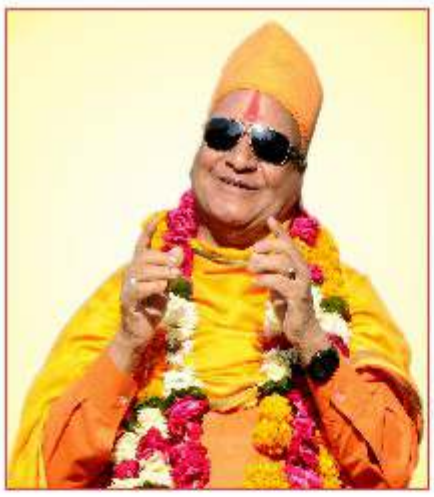

भौतिकता का अतिक्रमण नहीं, बल्कि अध्यात्मकर्मी मानसिकता का तत्वान्वेषण है। ध्यान, आंतरिक गुणवत्ता है, आत्मसत्ता की प्रतीति है। समर्पण अस्मिता और सत्ता की गति के अन्वेषण का प्रारंभिक बिंदु है।

ध्यान के लिए मानसिक पारदर्शिता, मन की गंभीरता और चित की अविकलता अनिवार्य है। एक सी अविकल अवस्था में प्रज्ञा स्वतः निर्मल दर्पण बनकर आभासी बिंब प्रस्तुत करने लगती है। वह अपनी कल्पना– शक्ति, अनुभव–शक्ति व चिंतन शक्ति को ऐसे मानसिक धरातल पर प्रतिष्ठित करती है जो चिर शांत और प्रवाह युक्त हो। ध्यान वस्तुतः मानसिक एकांत है। इसकी भाषा चिरंतन मौन है। इसकी अभिव्यंजना के लिए माया के सारे रूपक, बिंब अक्षम हो जाते हैं, किन्तु यह सत्य है कि प्रत्येक स्वस्थ मानसिकता वाले व्यक्ति में ध्यान की अल्पाधिक क्षमता होती है। वह कोई आलौकिकता युक्त हठयोगियों और सिद्धो की उपलब्धि नही है।

सामान्यतः व्यक्ति द्वंद्व में जीता है। एक ओर तो उसका मन आदर्श की ऊंचाईयों में विचरण करता है तो दूसरी ओर वह वासना के व्यामोह में फंसा रहता है। आदर्श में व्यक्ति स्वयं को अंतरिक्ष में विचरण करता हुए पाता है, किन्तु वास्तव में देखता है तो पता चलता है कि वह तो अभी धरातल पर ही है।

–कैलाश 'मानव'

धार लगाते रहें

लकड़ी के एक व्यापारी के यहाँ एक लकड़हारा नौकरी करता था। वह रोज 5 पेड़ काटता था, उसे प्रतिमाह 5000 रुपये वेतन मिलता था। कुछ समय पश्चात् एक दूसरा लकड़हारा भी उस व्यापारी के पास काम पर लगा। थोड़े ही दिनों के बाद उसे 10,000 रुपये प्रतिमाह वेतन मिलने लगा। पुराने लकड़हारे ने सोचा कि मैं 15 साल से काम कर रहा हूँ, मुझे महिने 5000 रुपये मिले, और एक महीने पहले काम पर लगे, इस नए लकड़हारे को 10,000 रुपये। उसे बहुत बुरा लगा। उसने अपने मालिक से शिकायत करते हुए कहा कि मैं 15 साल से काम कर रहा

हूँ, मुझे 5000 रुपये ही मिलते हैं और ये नया है, फिर भी इसे 10,000 रुपये मिलते हैं। आप ऐसा क्यों कर रहे हैं ? मालिक ने कहा कि तुम एक दिन में सिर्फ 5 पेड़ काटकर लाते हो और इसे कुछ ही दिन हुए हैं, फिर भी ये प्रतिदिन 10 पेड़ काटकर लाता है, ये तुमसे दुगुना काम करता है। इसलिए इसका वेतन भी तुझसे दुगुना है।

अगले दिन उस पुराने लकड़हारे ने खूब कोशिश की, लेकिन 5 से अधिक पेड़ नहीं काट पाया। लेकिन दूसरे लकड़हारे ने उस दिन भी बड़े आराम से 10 पेड़ काट दिए। इसका क्या कारण था कि एक नया व्यक्ति 10 पेड़ तक का पा रहा था और पुराना व्यक्ति उतनी की मेहनत के बाद भी केवल 5 पेड़ ही काट पाता था। दोनों के पास एक ही तरह की कुल्हाड़ी थी, सामर्थ्य था और मेहनत भी दोनों ही करते थे, फिर भी एक आगे और दूसरा पीछे क्यों था? उसका प्रमुख कारण था कि जो लकड़हारा 5 पेड़ काटता था, वह अपनी कुल्हाड़ी में धार नहीं लगाता था, और जो 10 पेड़ काटता था, वह 2 पेड़ काटने के बाद अपनी कुल्हाड़ी में धार लगाता था, और अपनी तेजधार कुल्हाड़ी के दम पर उतने ही समय में अधिक काम कर लेता था। ऐसा ही कुछ हमारे जीवन में भी होता है। हम समय के साथ अपने ज्ञान और विचारों में धार नहीं लगाते, और पीछे रह जाते हैं। अपनी प्रतिभा और गुणों को कई बार हम धार न लगाने की भूल कर जाते हैं। हमें भी धार लगानी चाहिए, चिंतन–मनन करना चाहिए। एक–एक क्षण का सदुपयोग करो। धनवान व्यक्ति एक–एक कण का संग्रह करता है तो धनवान बन जाता है, और गुणवान व्यक्ति एक–एक क्षण का सदुपयोग करता है और महान बन जाता है।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

फोन पर जिससे बात हुई उसके उत्साहजनक स्वर से कैलाश की आशा बढ़ गई। वह तो सोच रहा था कि बात करते ही उधर से इन्कार आ जायेगा लेकिन इस बारे में विस्तृत बातचीत के लिये वो दिल्ली बुला रहे थे। बात जमे, नहीं जमे इस कारण कैलाश स्वयं तो नहीं गया, उसने अपने एक साधक को दिल्ली भेज दिया। वह अपने कार्यकर्त्ताओं के साधक ही कहता था। साधक ने चैनल के कार्यालय में जाकर बातचीत की और नारायण सेवा को प्रतिदिन आधा घंटे का समय दिये जाने की मांग की। चैनल वाले तैयार थे मगर इसके लिये 75 हजार रु. प्रति माह का शुल्क था। साधक को उन्होंने बताया कि प्रतिदिन रात्रि को आठ बजे से साढ़े आठ बजे के प्राईम टाईम में प्रसारण किया जायगा जो अगले दिन सुबह 4 बजे से साढ़े चार बजे के मध्य निःशुल्क रूप से पुनः प्रसारित किया जायगा।

साधक सारी बातचीत करके उदयपुर लौट आया। कैलाश के सामने यक्ष प्रश्न यही था कि इस दिशा में आगे बढ़े या न बढ़े। उसे इतना तो विश्वास था कि चैनल को दिये जाने वाले 75 हजार रुपये प्रति महिना तो आसानी से निकल आयेंगे मगर आधे घंटे के कार्यक्रम में बोलेंगे क्या। आधे घन्टे प्रतिदिन बोलने का कार्यक्रम तैयार करने में भी तो रोज कई घन्टे लग जायेंगे। इतना समय कहां था। कैलाश व्यस्तताएं बढ़ गई थी। वह सेवाधाम में रहने लगा था, यहां मिलने आने वालों का तांता लगा रहता था, इस सबके बीच इतना समय निकाल पाना मुश्किल कार्य था।

अंग - 197